११. स्वतंत्रता गान

– *गोपालसिंह नेपाली*

संभाषणीय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम संबंधी पढ़ी/सुनी किसी प्रेरणादायी घटना/प्रसंग पर चर्चा कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ और उसमे सम्मिलित सेनानियों के नाम पूछें । ● अपने परिसर की किसी ऐतिहासिक भूमि के बारे में बताने के लिए कहें । ● किसी सेनानी के जीवन की प्रेरणादायी घटना का महत्त्वपूर्ण अंश कहलवाएँ । ● यदि विद्यार्थी सेनानी के स्थान पर होते तो क्या करते, बताने के लिए प्रेरित करें ।

घोर अंधकार हो,
चल रही बयार हो,
आज द्वार-द्वार पर यह दिया बुझे नहीं,
यह निशीथ का दिया ला रहा विहान है ।

शक्ति का दिया हुआ,
शक्ति को दिया हुआ,
भक्ति से दिया हुआ,
यह स्वतंत्रता दिया हुआ,
रुक रही न नाव हो,
जोर का बहाव हो,
आज गंगधार पर यह दिया बुझे नहीं,
यह स्वदेश का दिया प्राण के समान है ।

यह अतीत कल्पना,
यह विनीत प्रार्थना,
यह पुनीत भावना,
यह अनंत साधना,
शांति हो, अशांति हो,
युद्ध, संधि, क्रांति हो,
तीर पर, कछार पर, यह दिया बुझे नहीं,
देश पर, समाज पर, ज्योति का वितान है ।

परिचय

जन्म : ११ अगस्त १९११ बेतिया, चंपारण (बिहार)
मृत्यु : १७ अप्रैल १९६३
परिचय : इनका मूल नाम गोपाल बहादुर सिंह है । आप हिंदी के छायावादोत्तर काल के कवियों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं । कविता के क्षेत्र में आपने राष्ट्र प्रेम, प्रकृति प्रेम तथा मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्रण किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : उमंग, पंछी, रागिनी, नीलिमा, पंचमी, रिमझिम आदि (काव्य संग्रह), रतलाम टाइम्स, चित्रपट, सुधा एवं योगी नामक चार पत्रिकाओं का संपादन ।

पद्य संबंधी

प्रेरणागीत : प्रेरणागीत वे गीत होते हैं जो हमारे दिलों में उतरकर हमारी जिंदगी को जूझने की शक्ति और आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं ।

प्रस्तुत कविता में गोपाल सिंह नेपाली जी ने स्वतंत्रता के दीपक को हर परिस्थिति में प्रज्वलित रखने के लिए प्रेरित किया है ।

तीन-चार फूल हैं,
आस-पास धूल है,
बाँस हैं-बबूल हैं,
घास के दुकूल हैं,
वायु भी हिलोर दे,
फूँक दे, चकोर दे,
कब्र पर, मजार पर, यह दिया बुझे नहीं,
यह किसी शहीद का पुण्य प्राण दान है ।

झूम-झूम बदलियाँ
चूम-चूम बिजलियाँ,
आँधियाँ उठा रहीं,
हलचलें मचा रहीं,
लड़ रहा स्वदेश हो,
यातना विशेष हो,
क्षुद्र जीत-हार पर, यह दिया बुझे नहीं,
यह स्वतंत्र भावना का स्वतंत्र गान है ।

—०—

शब्द संसार

बयार (स्त्री.सं.) = हवा
निशीथ (स्त्री.सं.) = निशा, रात
विहान (पुं.सं.) = सवेरा
कछार (पुं.सं.) = किनारा
वितान (पुं.सं.) = आकाश, गगन
दुकुल (पुं.सं.) = दुपट्टा
हिलोर (स्त्री.सं.) = लहर

श्रवणीय

क) राष्ट्रभक्ति पर आधारित कोई कविता सुनिए ।
ख) अपने देश की विविधताएँ सुनिए ।

लेखनीय

समूह बनाकर भारत की विशेषता बताने वाले संवाद का लेखन कीजिए तथा समारोह में उसकी प्रस्तुति कीजिए ।

पठनीय

भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र संबंधी जानकारी पढ़िए और छोटी-सी टिपण्णी तैयार कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'विश्व स्तर पर भारत की पहचान निराली है', स्पष्ट कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) 'यह स्वतंत्र भावना का स्वतंत्र गान है' इस पंक्ति में आई कवि की भावना स्पष्ट कीजिए ।

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अतीत	प्रार्थना
पुनीत	साधना
अनंत	भावना
विनीत	कल्पना
	अशांति

पाठ से आगे

अंतरजाल/ग्रंथालय से 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन' (सार्क) में भारत की भूमिका की जानकारी प्राप्त करके टिप्पणी लिखिए ।

8QLJKC